आभूषण : परिचय

Duration : 03.32 Transcribed words : 712

- संगीत -

00.11 जयदेव तोतलानी : मेरा नाम जयदेव तोतलानी है... मैं विष्णु ज्वैलर्स का प्रोपराईटर हूँ... और पिछले 18 - 20 साल से हम लोग सिल्वर मैन्युफैक्चरिंग कर रहे हैं... सिल्वर ज्यूलरी इसलिये बनाते हैं क्योंकि हमारा पैशन है... मेरा और मेरे बिजनेस पार्टनर का... जो शुरू के जो पांच सात साल होते हैं बहुत ही ज़्यादा स्ट्रगलिंग होते हैं... इन पाँच सात सालों में कई उतार चढ़ाव आते हैं और चूँकि आप इंसान हो, आप टूट जाते हो, आप जो उम्मीद करके इस बिजनेस में आये होते हो, वो नहीं होता है... बाहर से पहले बहुत सुनहरी दिखता है... फिर जब आप अंदर आते हो तो इसकी बारीकियाँ देखते हो तो आपको लगता है कि बहुत मेहनत है... बहुत ही ज़्यादा इसके लिये भी पैशन चाहिये, डिजाईनिंग के लिये, प्रोडक्शन के लिये... हर चीज हिन्दुस्तान में समय लेती है... आदमी एक लकीर पे चल रहा है... उससे हट के अगर कुछ करना चाहते हो तो बहुत मुश्किलें आती हैं... तो वो हमारे साथ भी आईं... हमारे को भी जो शुरू के पाँच सात साल थे, बहुत ही ज़्यादा मुश्किल भरे थे... और, लेकिन ठीक है, हम लोग स्ट्रगल लिया, और उससे बाहर निकले, और आज यहाँ पर हैं, जहाँ पर हैं.. .

01.11 जयदेव तोतलानी : जयपुर, पूरे जैसे कि दुनिया में फेमस है ज्यूलरी के लिये और स्टोन्स के लिये, तो इससे बढ़िया जगह इसलिये नहीं हो सकती क्योंकि हमारे पास स्टोन्स की बहुत अच्छि अवेलेब्लिटी है... हर तरीके का स्टिन, हर शेप में, हर साईज में अवेलेबल हो जाता है... और दूसरा रीजन जो है, यहां की लेबर बहुत चीप है, बहुत ही सस्ती लेबर है... तो इस वजह से ये जो बिजनेस है वो जयपुर में सैंटर्ड है और इस वजह से हम लोग कर रहे हैं... और अच्छा रिस्पोन्स है...

01.41 जयदेव तोतलानी : ज्यूलरी जयपुर में क्यूँ है ?

01.44 जयदेव तोतलानी : तो ज्यूलरी जयपुर में इसलिये है क्योंकि यहां बहुत सारे महाराजा, महारानियाँ थी... और वो सबसे बैस्ट टारगेट होते थे ज्यूलरी बेचने के लिये, बड़े बड़े ज्वैलर्स के लिये... तो इस वजह से धीरे धीरे धीरे धीरे ज्यूलरी यहाँ पनपने लगी और फिर जब अँग्रेज लोग आये, उन्होंने ये सब चीजें देखी यहाँ पे, कि इतनी सस्ती और इतनी अच्छी ज्यूलरी बनती है, और फिर वो लोग इसको बाहर ले गये... और वहाँ पे जो उसकी वैल्यू थी बहुत अच्छी थी... धीरे धीरे ये ग्लोबल

हो गया और फिर हर जगह जयपुर की बनी हुई ज्यूलरी बाहर बिकने लग गई... हर दूसरा आदमी जो है वो किसी ना किसी तरह ज्यूलरी से जुड़ा हुआ है... और यहाँतो वो स्टोन काटता है, या तो फिर वो सिल्वर की मैन्युफैक्चरिंग करता है... या फिर वो दलाली करता है...

02.25 जयदेव तोतलानी : ग्राहकों को इंडिया इसलिये अच्छा लगता है... सबसे पहला रीजन तो मैं दूँगा कि यहां कुछ भी कस्टमाईज कर सकते हैं... वो लोग अपने डिजाईन ड्रा करके लाते हैं, स्कैचिस बना के लाते हैं, फोटोग्राफ ले के आते हैं... हम लोग उसका फस्ट सैम्पल उनको तीन घंटे में बनाकर दिखा देते हैं...

02.40 बपन मांझी : जो देता है मेरे को वो ही कर लेता हूँ... और जो ड्राईंग करके देते हैं सेठ जी लोग बोलते हैं, इसको बना के ले आओ, फिर हमने क्या करता है, वो ड्राईंग के वो लेकर आता हूँ... फिर उसको देखता हूं... एक दो बार मैं कोशिश करता हूं बनाने के लिये... फिर, फिर अगर वो नहीं हुआ, फिर कोशिश करना पड़ता है हमारे को, ये बनाना ही पड़ेगा...

03.00 समीर बिसवास : कुछ अँगूठी दे दिया मेरे को... अच्छा करके मैंने जो सैंपल बताया, जिस टाईप में बताया, उस टाईप में करके मैंने उसको दिया... जिस, जिस पोजीशन में मेरे को दिया, एक, एक तो ड्राईंग करके मेरे को दे दिया, मैंने पूरा ज्वैलरी बना कर उसको दिया हूँ...

03.14 जयदेव तोतलानी : वो तो एक सपना लेकर आते हैं कि मैं तो इस तरह की ज्वैलरी अगर मेरे पास हो तो मैं बेच सकता हूँ... वो जब यहां तीन घंटे में जब वो लाईव होकर उनके सामने आती है तो वो जो उनकी आँखों में खुशी होती है वो देखने में मजा आता है... मेरे ख्याल से हमारे लिये पीछे देखने का कोई चांस नहीं है... आगे ही बढ़ना है और बहुत ऊँचाईयों पे जाना है...